सनातन को मिटाना असंभव : भागवत 04 | अमेरिका में मोदी 09 | तिरंगे में लगाए चांद-तारे 11

राष्ट्रीय विचारों का पाक्षिक

₹10

पाथेय कण

आश्विन कृ.14, वि.2081, युगाब्द 5126, 01 अक्टूबर, 2024

39 वर्षों से निरंतर

संघ स्थापना के शताब्दी वर्ष का प्रारंभ

patheykan@gmail.com @patheykanofficial @patheykanofficial @patheyofficial1 @patheykan

www.patheykan.com

संपादकीय

1 सितम्बर का अंक पढ़ा। इस बार का अंक अधिक दमदार लगा। संपादकीय 'हम चुपचाप नहीं रह सकते' ने हृदय को छुआ। अब समय आ गया है कि हर हिंदू बोले..'हम भागेंगे नहीं, हम छिपेंगे नहीं, हमारे भाई पीड़ित हों तो हम चुपचाप नहीं रह सकते।' ओजस्वी व प्रेरक संपादकीय ने चिंतन को नई दिशा दी, ज्ञानवर्धन किया है।

अंक की विषयवस्तु उपादेय और सामयिक लगी। कृपया इसे बनाए रखें।

*-**डॉ. मनोज गुप्ता**, मालवीय नगर, जयपुर*

कुंठाओं को दूर करती

निस्संदेह, पाथेय कण पढ़ने से पूर्व भी मैं ऐसी अनेक पुस्तकें पढ़ता था, जो हिंदुत्व एवं अपने मूल पौराणिक विचारों से ओतप्रोत थी, परंतु अब मैं पाथेय कण का नियमित अध्ययन करता हूं, यह पुस्तक अंतर्मन में उपस्थित कुंठाओं को दूर करती है एवं तर्कसंगत विचारों पर बल देती है। मैं चाहूंगा की भारत का प्रत्येक युवा इसे जरूर पढ़े।

*-**अजय सिंह राठौड़**, सिरसला, चूरु*

ज्ञान में वृद्धि

मेरी आध्यात्मिक धर्म ग्रंथों को पढ़ने में शुरू से ही रूचि रही है। मैंने जब से पाथेय कण पढ़ना शुरू किया है मुझे बहुत अच्छा लगता है और मेरा आध्यात्मिक ज्ञान भी विकसित होने लगा है। मैं सनातन धर्म और संस्कृति के बारे में जानकारी लेकर अपने चरित्र में ढालने की कोशिश करता हूं। अपने महापुरुषों के बारे में जानकारी और उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा मुझे मिली है। मैं पाथेय कण का बहुत आभारी हूँ।

*-**राधेश्याम जोशी**, तारानगर, चूरू*

वर्ष शताब्दी अवसर अनुपम

ध्येय समर्पित समरस जीवन, सब मिल अंगीकार करें।
वर्ष शताब्दी अवसर अनुपम, संगठन विस्तार करें।
चारित्रिक और संस्कारमय,साधकों का सृजन करें।
राष्ट्रहित की साधना में , नित्य साधक सभी बनें।
सुप्त शक्ति का पुनर्जागरण , चहुं ओर साकार करें।।
अपनी भाषा अपनी माटी, निज गौरव का भान करें।
संस्कारक्षम है परिपाटी, शस्त्र शास्त्र का ज्ञान करें।
भाव भरे जन जन में स्वदेशी, तन मन से स्वीकार करे।।
एक बनें और नेक बनें हम, भेद भाव का त्याग करें।
सात्विकता और शुचिता से हम, समरसता निर्माण करें।
जाति भाषा वर्ग भिन्नता का, मिल सब परित्याग करें।
हरा भरा परिवेश हो अपना, जल संरक्षण शुरू करें।
संकल्पित हो मां धरती को, प्लास्टिक से अब मुक्त करें।
पेड़ लगाकर पोषित करने की,एक नई शुरुआत करें।।
अधिकारों से पहले हम सब, दायित्वों का चयन करें।
शिष्ट आचरण बने सभी का, कर्तव्यों का वहन करें।
राष्ट्र प्रथम जीवन में अपने, मंत्र यही स्वीकार करें।।

*- **अज्ञानी 'गजेन्द्र', नागौर***

'महिला सुरक्षा' विशेषांक

नवम्बर माह में पाथेय कण का दीपावली विशेषांक निकालने की योजना बनी है। विशेषांक का विषय रहेगा '**महिला सुरक्षा**'। इस विषय पर तथ्यात्मक लेख लिखने को इच्छुक लेखक / लेखिकाएं संपादक, पाथेय कण से मो. 9414312288 पर संपर्क कर सकते हैं। विज्ञापनदाता कृपया मो. 9929722111 पर श्रीमान् ओमप्रकाश जी (प्रबंध संपादक) से सम्पर्क करें।

पाथेय कण पोर्टल पर पढ़ें (दिए गए लिंक पर क्लिक करें)

- **राष्ट्र-संस्कृति से आप्लावित पं. दीनदयाल उपाध्याय का राजनैतिक दर्शन**
  https://patheykan.com/?p=29475
- **कलयुग में सतयुग का अहसास कराता देवमाली गांव**
  https://patheykan.com/?p=29457
- **लघु फिल्म 'भास्कर बेचैन' की स्क्रीनिंग**
  https://patheykan.com/?p=29443

पाथेय कण
आश्विन कृ.14 से आश्विन शु.13 तक
विक्रम संवत 2081
युगाब्द 5126
01-15 अक्टूबर, 2024
वर्ष : 40 अंक : 13

सम्पादक : रामस्वरूप अग्रवाल
सह सम्पादक : मनोज गर्ग
प्रबंध सम्पादक : ओमप्रकाश
सह प्रबंध सम्पादक : श्याम सिंह
अक्षर संयोजन : कौशल रावत

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन' 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राजस्थान)
E-mail : patheykan@gmail.com

पाथेय कण संस्थान के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक: माणकचन्द

सहयोग राशि
एक वर्ष 150/-
पन्द्रह वर्ष 1500/-

पाथेय कण प्राप्त नहीं होने पर प्रात: 10 से सायं 5 बजे तक संपर्क करें- 79765 82011 इसके अतिरिक्त समय में वाट्सएप व मैसेज करें अथवा ईमेल पर जानकारी दें। (अति आवश्यक होने पर मो.न. 9166983789 पर मोहित जी से संपर्क कर सकते हैं)

स्वसंरक्षण-सक्षम और शक्तिसंपन्न समाज है लक्ष्य

वह स्वर्णिम दिन अवश्य आने वाला है

आने वाली विजयादशमी को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपनी स्थापना के 100वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। बताते हैं कि विजयादशमी, 27 सितम्बर, 1925 को डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार ने अपने 25 साथियों के साथ विचार-विमर्श करते हुए संघ की शुरुआत की। लगभग 7 माह बाद 17 अप्रैल, 1926 को आपसी चर्चा करने के पश्चात् संगठन का नाम तय हुआ। डॉक्टर जी ने संगठन में कोई पद नहीं लिया था, परंतु सब लोग उन्हें ही मार्गदर्शक एवं मुखिया के रूप में देखते थे, इसलिए सदस्यों के आग्रह पर 10 नवम्बर, 1929 को डॉक्टरजी ने सरसंघचालक का दायित्व संभाला। संघ में पद के स्थान पर दायित्व शब्द का उपयोग किया जाता है। 1927 की गुरु पूर्णिमा पर पहली बार भगवा ध्वज के समक्ष गुरु दक्षिणा समर्पित की गई।

इस प्रकार संघ की औपचारिक संरचनाएं बनती चली गई। यह प्रक्रिया सामान्यतया किसी संगठन या संस्था की स्थापना हेतु अपनाई जाने वाली प्रक्रिया से भिन्न थी। संघ भी तो कोई साधारण संगठन या संस्था कहां है?

संघ के वर्तमान सरसंघचालक डॉ. भागवत कहते हैं, *''संघ चाहता है कि संपूर्ण समाज संगठित हो और 'पूरे समाज' का अर्थ है- वह समाज, जो भारत को अपनी मातृभूमि मानकर उसकी भक्ति करता है तथा वह भी जो तकनीकी रूप से भारत का नागरिक बनकर रहना चाहता है, भारतीय पूर्वजों की विरासत जिनको मिली तथा इस भारतीय संस्कृति को अच्छा मानते हुए जो अपने जीवन में उसका आचरण करना चाहते हैं, विविधता में एकता को साकार करना चाहते हैं। इन सबको पहचान की दृष्टि से हम हिंदू मानते हैं।''*

कहा जाता है कि संघ को समझना है तो इसके संस्थापक डॉक्टर हेडगेवार को समझना होगा, उनके जीवन, कार्य और विचारों को जानना होगा। संघ और डॉ.हेडगेवार एक दूसरे के पर्याय माने जाते हैं।

1921 में गांधी जी के असहयोग आंदोलन में डॉ. हेडगेवार ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। उन पर ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध भड़काऊ भाषण देने और विद्रोह का आह्वान करने का आरोप लगाकर मुकदमा चलाया गया। मुकदमे के दौरान सत्र न्यायाधीश स्मेली की कोर्ट में उन्होंने अपने बयान में कहा, *''मैं अभी भी यही कहता हूँ कि हिंदुस्थान हिंदुस्थानियों का है और स्वराज्य हमारा अंतिम ध्येय है।''* इसी मुकदमे के दौरान 9 जुलाई, 1921 को डॉ. हेडगेवार ने न्यायालय में प्रस्तुत अपने लिखित बयान में कहा *''क्या कोई ऐसा कानून है जिसके अंतर्गत एक देश के लोगों को दूसरे देश के ऊपर राज्य करने का अधिकार मिल जाता है?... जैसे ब्रिटेन के लोग ब्रिटेन पर शासन करते हैं, हम अपने देश पर उसी प्रकार शासन करना चाहते हैं। हमें पूर्ण स्वतंत्रता चाहिए और इस पर हम कोई समझौता नहीं कर सकते।''* न्यायाधीश स्मेली ने उनके बयान पर टिप्पणी करते हुए कहा कि *''उनके मूल भाषण की अपेक्षा यह वक्तव्य कहीं अधिक राजद्रोहपूर्ण है।''* डॉ. हेडगेवार को एक वर्ष के सश्रम करावास की सजा दी गई। 1930 में गांधी जी के सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लेने के कारण उन्हें 21 जुलाई, 1930 को फिर से 9 माह की सश्रम कारावास की सजा मिली।

डॉ. हेडगेवार ने कहा था, *''स्वप्रेरणा से एवं स्वयंस्फूर्ति से राष्ट्र सेवा का बीड़ा उठाने वाले व्यक्तियों का केवल राष्ट्र के कार्य के लिए निर्मित संघ ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ है।''*

डॉक्टर जी ने अपने एक शुभचिंतक को लिखे पत्र में लिखा था- *''अपना संपूर्ण हिंदुस्थान देश यथाशीघ्र सुसंगठित कर संपूर्ण हिंदू समाज को स्वसंरक्षणक्षम एवं बलसंपन्न करने के उद्देश्य से इसे प्रारंभ किया गया है।''*

1939 में अपने एक भाषण में डॉक्टर जी ने कहा, *''अपने कार्य की पूर्ति अपनी आंखों से देखने का प्रण संघ ने कर लिया है।... कई लोग कहते हैं कि कार्य बड़ा कठिन है, उसमें भारी कठिनाइयां हैं। मैं कहता हूँ, कठिनाइयां भले ही हों, हमें तो पहले से ही पता होना चाहिए कि हमारा मार्ग कंटकाकीर्ण है, वहां गुलाब के फूलों की आशा हमने कब की थी? देश को उसका पूर्व गौरव प्राप्त करा देना न तो कोरी गप्पे हैं और न बाजार में मिलने वाली कोई चीज। इसे प्राप्त करने के लिए सर्वस्व त्याग और परिश्रम तुम्हारे सिवाय और कौन कर सकता है?''*

नागपुर में आयोजित संघ शिक्षा वर्ग में 9 जून, 1940 को उन्होंने अपना अंतिम भाषण दिया। उन्होंने कहा *''वह सुवर्ण दिन जरूर आने वाला है जब समस्त भारतवर्ष संघमय दृष्टिगोचर होगा। फिर सारे संसार में ऐसी कोई भी शक्ति नहीं होगी जो हिंदू जाति की ओर तिरछी नजर से देखने का साहस करे।''* -रामस्वरूप

देश पर आने वाले संकटों में यह ताकत नहीं कि सनातन को मिटा सके - डॉ. भागवत

राष्ट्र को परम वैभव सम्पन्न बनाने के लिए पूरे समाज को योग्य बनाना पड़ेगा

हिन्दू धर्म को सबके कल्याण की कामना करने वाला विश्व धर्म बताते हुए संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि हिन्दू का मतलब विश्व का सबसे उदारतम मानव है। उन्होंने स्वयंसेवकों से सामाजिक समरसता के माध्यम से बदलाव लाने का आह्वान करते हुए कहा कि हमें छुआछूत के भाव को पूरी तरह मिटा देना है। डॉ. भागवत अपने 4 दिवसीय प्रवास के दौरान बीती 15 सितम्बर को अलवर के इन्दिरा गांधी खेल मैदान में स्वयंसेवकों के एकत्रीकरण कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में लगभग 3 हजार स्वयंसेवक उपस्थित थे।

हिंदू मानव धर्म है, विश्व धर्म है

डॉ. भागवत ने कहा कि जिसे हम हिन्दू धर्म कहते हैं यह वास्तव में मानव धर्म है, विश्व धर्म है और सबके कल्याण की कामना लेकर चलता है। हिन्दू का मतलब विश्व का सबसे उदारतम मानव, जो सबके प्रति सद्भावना रखता है, पराक्रमी पूर्वजों का वंशज है, जो विद्या का उपयोग विवाद पैदा करने के लिए नहीं करता, ज्ञान देने के लिए करता है। हिन्दू धन का उपयोग मदमस्त होने के लिए नहीं करता, दान के लिए करता है और शक्ति का उपयोग दुर्बलों की रक्षा के लिए करता है। यह जिसका शील है, यह जिसकी संस्कृति है वह हिन्दू है। चाहे वह पूजा किसी की भी करता हो, भाषा कोई भी बोलते हो, किसी भी जात-पात में जन्मा हो, किसी भी प्रांत का रहने वाला हो, कोई भी खानपान रीति-रिवाज को मानता हो। ये मूल्य और संस्कृति जिनकी है, वह सब हिन्दू हैं।

राष्ट्र को समर्थ करना है

उन्होंने कहा कि हमारे राष्ट्र को समर्थ करना है। हमने प्रार्थना में ही कहा है कि यह हिन्दू राष्ट्र है, क्योंकि हिन्दू समाज इसका उत्तरदायी है। इस राष्ट्र का अच्छा होता है तो हिन्दू समाज की कीर्ति बढ़ती है। इस राष्ट्र में कुछ गड़बड़ होता है तो इसका दोष हिन्दू समाज पर आता है, क्योंकि वे ही इस देश के कर्ताधर्ता हैं। *राष्ट्र को परम वैभव संपन्न बनाने का काम पुरुषार्थ के साथ करने की आवश्यकता है और हमें समर्थ बनना है, जिसके लिए पूरे समाज को योग्य बनाना पड़ेगा।*

पंच परिवर्तन को जीवन में उतारने का किया आह्वान

स्वयंसेवकों से छुआछूत और ऊंच-नीच का भाव मिटाने का आह्वान करते हुए उन्होंने कहा कि हम अपने धर्म को भूलकर स्वार्थ के अधीन हो गए, इसलिए छुआछूत बढ़ा, ऊंच-नीच का भाव बढ़ा, हमें इस भाव को पूरी तरह मिटाना है। जहां संघ का काम प्रभावी है, संघ की शक्ति है, वहां कम से कम मंदिर, पानी, श्मशान सब हिंदुओं के लिए खुले होंगे। यह काम समाज का मन बदलते हुए करना है। सामाजिक समरसता के माध्यम से परिवर्तन लाना है। *उन्होंने स्वयंसेवकों से सामाजिक समरसता, पर्यावरण, कुटुम्ब प्रबोधन, 'स्व' का भाव और नागरिक अनुशासन इन पांच विषयों को अपने जीवन में उतारने का आह्वान किया,* और जब इन बातों को स्वयंसेवक अपने जीवन में उतारेंगे तब समाज भी इनका अनुसरण करेगा।

पर्यावरण संरक्षण

उन्होंने कहा कि पर्यावरण के नाते हिन्दू की परंपरा सब जगह चैतन्य देखी है, इसलिए पर्यावरण के बारे में जो होना चाहिए, वह हमको करना है। छोटी बातों से प्रारंभ करना। पानी बचाओ, सिंगल प्लास्टिक हटाओ, पौधे लगाओ, घर को हरित घर बनाना, घर में हरियाली, घर में बगीचा और सामाजिक रूप से भी अधिक से अधिक पेड़ लगाना, यह हमें करना है।

परिवार में एक साथ भोजन करें

डॉ.भागवत ने कहा कि भारत में भी परिवार के संस्कारों को खतरा है। मीडिया के दुरूपयोग से नई पीढ़ी बहुत तेजी से अपने संस्कार भूल रही है। इसलिए *सप्ताह में एक बार निश्चित समय पर अपने कुटुम्ब के सब लोगों को एक साथ बैठना, अपनी श्रद्धा अनुसार घर में भजन-पूजन करना उसके पश्चात् घर में बनाया हुआ भोजन साथ में करना, समाज के लिए भी कुछ ना कुछ करने की योजना करना इसके लिए छोटे-छोटे संकल्प परिवार के सब लोग लें।* अपने घर के अंदर भाषा, भूषा, भवन, भ्रमण और भोजन अपना होना चाहिए। इस तरह से कुटुम्ब प्रबोधन करना है।

संघ को अब सब जानते भी हैं और मानते भी हैं

सरसंघचालक जी ने कहा कि अगले वर्ष संघ कार्य को 100 वर्ष पूरे हो रहे हैं। संघ की कार्य पद्धति दीर्घकाल से जारी है। हम कार्य करते हैं तो उसके पीछे विचार क्या है, यह हमें ठीक से समझ

लेना चाहिए और अपनी कृति के पीछे यह सोच हमेशा जागृत रहनी चाहिए। पहले संघ को न कोई जानता था और न कोई मानता था, लेकिन अब सब जानते भी हैं और मानते भी हैं। हमारा विरोध करने वाले भी जुबां से तो विरोध करते हैं, लेकिन मन से तो मानते ही हैं। हमें हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति और हिन्दू समाज का संरक्षण राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति के लिए करना है।

राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने का दिया संदेश

उन्होंने स्वयंसेवकों को नियमित रूप से शाखाओं में भाग लेने और राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने का संदेश देते हुए कहा कि *शाखाएं समाज में समरसता और एकता को मजबूत करने का प्रमुख साधन है।* समाज को जातियों में बांटकर राष्ट्र को तोड़ने की साजिश रची जा रही है। इस पर चिंता जताते हुए कहा कि समाज में असमानता और छुआछूत के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए। यदि कहीं ऐसा होता है, तो स्वयंसेवकों को इसे रोकने के लिए सक्रिय रूप से आगे आकर व्यक्ति को व्यक्ति से जोड़ने की भावना से काम करना चाहिए। देश में कुछ ताकतें ऐसी हैं जो समाज में बिखराव पैदा करने

की कोशिश कर रही हैं, और ऐसे समय में स्वयंसेवकों को इन विभाजनकारी ताकतों का मुकाबला करना चाहिए और समाज में शांति और एकता बनाए रखने के लिए आगे आना चाहिए।

भारत जमीन मात्र नहीं, भारत के साथ सनातन धर्म है

प्रवास के दौरान वे कोटपूतली-बहरोड़ जिले के पावटा के पास बावड़ी स्थित बालनाथ आश्रम में चल रहे एक वर्षीय महामृत्युंजय महायज्ञ में सम्मिलित हुए। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि सनातन संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए यज्ञ परंपरा का निर्वहन किया जा रहा है। यज्ञ में बिना किसी भेदभाव व छुआछूत के सर्व हिन्दू समाज भाग ले रहा है। वर्तमान परिस्थितियों में देश पर आने वाले संकटों की ये ताकत नहीं है कि वो भारत को मिटा सके। *भारत जमीन मात्र नहीं, भारत के साथ सनातन धर्म है और सनातन धर्म के साथ भारत है। हमारी संस्कृति यज्ञमय संस्कृति है।* इस अवसर पर महंत बस्तीनाथ जी ने सरसंघचालक जी को स्वर्णमण्डित सिद्ध श्रीयंत्र भेंट किया, साथ ही प्रतीक चिह्न और दुपट्टा पहनाकर आभार व्यक्त किया।

संगठनात्मक बैठकों में हुए शामिल

सरसंघचालक जी ने संगठनात्मक बैठकों के दौरान संघ के शताब्दी वर्ष को लेकर कार्य विस्तार एवं सुदृढ़ीकरण पर मार्गदर्शन दिया। जयपुर प्रांत संघचालक श्री महेंद्र सिंह मग्गो ने बताया कि बैठकों में जयपुर प्रांत के सभी 1673 मंडलों को कार्य युक्त करने का संकल्प लिया गया। एक मंडल में करीब 5-6 गांव होते हैं। ■

सीकर

सेवा भारती ने बढ़ाया हाथ, तो संवरा जीवन

सीकर की दो वंचित बस्तियां हैं, नट और स्वामी बस्ती। यहाँ के लोगों का कुछ समय पूर्व तक जीविकोपार्जन अधिकांशत: भिक्षावृत्ति और पारम्परिक नाच एवं गाने से होता था।

आस पास के कुछ मुसलमानों ने इनकी सरलता का लाभ उठाते हुए अपने चंगुल में फंसाया। वे उनसे काम करवाते लेकिन उसका मेहनताना नहीं देते जिसके कारण इनकी माली हालत हमेशा बिगड़ी रहती थी।

इनमें से एक श्यामलाल नट को इन्होंने शुरुआत में रुपये का लालच दिया। धीरे-धीरे उसे अपने जाल में फंसाते गये। जब कभी श्यामलाल को पैसे की आवश्यकता होती, तो ये उसे मोटी ब्याज दर पर पैसे दे देते थे। बाद में ब्याज इतना बढ़ गया कि उसे चुकाना भारी पड़ने लगा।

जब यह बात सेवा भारती के कार्यकर्ताओं तक पहुंची तो उन्होंने पीड़ितों से सम्पर्क किया और उन्हें स्वयं का बैण्ड तैयार करने के लिए कहा। कार्यकर्ताओं ने वित्त निगम से 1 लाख 80 हजार रुपये का ऋण मात्र पच्चीस पैसे प्रति सैकड़ा की दर से दिलवाने में पूरी सहायता की। पहली बार किसी नट जाति के व्यक्ति को इस प्रकार का ऋण मिला था।

इस राशि से श्यामलाल ने स्वयं का एक बैण्ड तैयार किया। इस बैण्ड से लगभग 50 अन्य लोगों को रोजगार मिला। बैण्ड से होने वाली अच्छी आय के चलते अब श्यामलाल सीकर में अपना पक्का मकान भी बनवा रहे हैं। उनके तीनों बच्चे शिक्षित हो गए हैं।

सेवा भारती के प्रयासों के चलते बस्ती के लोगों में भिक्षावृत्ति लगभग शून्य हो गयी है। आज बस्ती में कुल तीन बैण्ड पार्टी हैं। जिनके माध्यम से बस्ती के अनेक लोगों को नियमित रूप से स्थायी रोजगार मिल रहा है। नियमित आय के कारण इनका सामाजिक-आर्थिक स्तर काफी सुधरा है तथा वे सम्मानजनक जीवन जी रहे हैं।

शस्त्र और शास्त्र की पूजा का पर्व : विजयादशमी

■ हरिशंकर गोयल ''श्री हरि''

आश्विन माह के शुक्ल पक्ष की दशमी के दिन सेठ हरि नारायण पूजा की तैयारियां करा रहे थे । उनके घर में भगवान श्रीराम का बड़ा भव्य दरबार सजाया गया था । अस्त्र , शस्त्र जैसे तलवार, छुरा, कटार , रिवॉल्वर, बंदूक, गोलियां सब करीने से सजा कर रखी गई थीं । उन्हीं के साथ वेद , पुराण , उपनिषद्, रामायण, महाभारत, श्रीमद्भगवद्गीता की प्रति भी उनके आकार के क्रम में सजा कर रखी गई थीं। पूजन की सामग्री एक चांदी के थाल में क्रमबद्ध तरीके से रख दी गई थी । पूजा कराने के लिए पंडित जी भी आ गये थे और यज्ञ के लिए वेदी भी तैयार हो गई थी। घर के सब लोग नये वस्त्र पहन कर पूजा के लिए पूजा घर में आ गये थे । इस पूजा के लिए मनु अमरीका से और वैदेही बैंगलोर (अब बेंगलूरु) से आये थे । दादाजी हरिनारायण ने उन्हें विशेष रूप से बुलवाया था । बच्चे आधुनिक शिक्षा लें ये तो ठीक है पर अपने संस्कारों से भी जोड़े रखने के लिए उन्हें ऐसे कार्यक्रम में अवश्य सम्मिलित करना चाहिए ।

मनु के मन में अनेक प्रश्न उठ रहे थे लेकिन वह संकोच वश पूछने का साहस नहीं जुटा पा रहा था । दादाजी ने उसके चेहरे के भावों को ताड़ लिया और बोले ''कुछ पूछना चाहते हो मनु ?'

मनु तो इस अवसर का इंतजार ही कर रहा था , बोला ''आप नाराज तो नहीं होंगे ना दादाजी ?''

''तुम्हारे प्रश्न पूछने पर मुझे प्रसन्नता होगी मनु ! हमारी संस्कृति की यही तो विशेषता है जो हर किसी को अपनी बात निर्भीकता से कहने की स्वतंत्रता प्रदान करती है । पूछो, क्या पूछना चाहते हो? ''

''ये विजयादशमी का पर्व हम क्यों मनाते हैं दादाजी'' ?

''अनेक कारण हैं पुत्र ! इस दिन मां कात्यायनी ने महिषासुर (राक्षस) का वध किया था इसलिए इसे विजयादशमी कहते हैं। यह पर्व त्रेता युग में भी मनाया जाता था । त्रेता युग में भगवान विष्णु ने राक्षसों का वध करने के लिए 'राम' के रूप में अवतार लिया था । इसी विजयादशमी के दिन भगवान श्रीराम ने रावण का वध किया था इसलिए अब हम इस पर्व को अधर्म पर धर्म की विजय के रूप में मनाते हैं । भगवान शिव की पत्नी माता सती ने इसी दिन अपने पिता दक्ष प्रजापति के यज्ञ में भगवान शिव का अपमान देखकर योगाग्नि से स्वयं को भस्म कर लिया था तब भगवान शिव के गणों ने वीरभद्र के सेनापतित्व में यज्ञ विध्वंस कर दिया था और दक्ष का वध कर दिया था । महाभारत काल में इसी दिन पांडव द्यूत में अपना राज्य गंवाकर 12 वर्ष के वनवास और 1 वर्ष के अज्ञातवास के लिए चले गए थे और अज्ञातवास की समाप्ति पर इसी दिन अर्जुन ने शमी (खेजड़ी) वृक्ष से अपने शस्त्र उतार कर कौरवों से विराटनगर में युद्ध किया

था और उन्हें परास्त किया था।''

''ओह ! इतने सारे कारण तो आज पहली बार पता चले हैं''। वैदेही भी कूद पड़ी थी इस वार्तालाप में ।

''हमने शास्त्रों को पढ़ना बंद कर दिया है ना, इसलिए।''

''क्या यह पर्व हमारे शहर में ही मनाया जाता है या पूरे देश में ?'' मनु का अगला प्रश्न था ।

''पूरे देश में मनाया जाता है यह पर्व। विजयादशमी से पूर्व नवदुर्गा का पर्व 'नवरात्र' मनाया जाता है। जिसका समापन विजयादशमी के पर्व के रूप में होता है। बंगाल, असम और उड़ीसा में यह दुर्गा पूजा के रूप में मनाया जाता है। इसमें नवरात्रों की षष्ठी से मां दुर्गा की प्रतिमा प्रतिष्ठित की जाती है। अष्टमी के दिन महा उत्सव होता है और दशमी के दिन यह पर्व पूर्ण होता है । बंगाल में माता को सिंदूर लगाती हैं स्त्रियां और एक दूसरे को भी सिंदूर लगाकर बधाई देती हैं । इसे 'सिंदूर खेला' कहते हैं । गुजरात में नौ दिनों तक 'डांडिया रास' होता है जिसमें गरबा खेला जाता है। अब तो यह गरबा लगभग पूरे देश में खेला जाने लगा है । दक्षिण भारत के राज्यों तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश और तेलंगाना में भी यह पर्व धूमधाम से मनाया जाता है। हिमाचल प्रदेश के कुल्लू शहर और कर्नाटक के मैसूर का दशहरा तो विश्व प्रसिद्ध है। राजस्थान में भी कोटा शहर में 'राष्ट्रीय दशहरा मेला' लगता है जिसमें लाखों लोग भाग लेते हैं। पूरे उत्तरी भारत में यह पर्व पूरे उत्साह के साथ मनाया जाता है। महाराष्ट्र में भी इसे धूमधाम से मनाते हैं''।

''दादाजी, क्या नवरात्र पर्व और विजयादशमी पर्व आपस में जुड़े हुए हैं ?'' वैदेही ने पूछ लिया ।

''नवरात्रि पर्व 'शक्ति' की पूजा का पर्व है और विजयादशमी अधर्म पर धर्म की विजय का पर्व है । अधर्म पर धर्म की विजय बिना 'शक्ति' अर्थात् मां दुर्गा की कृपा के कैसे संभव है। भगवान श्रीराम ने किष्किंधा से रवाना होने से पहले नवरात्रों में मां दुर्गा की पूजा करके उन्हें प्रसन्न किया था । अत: ये दोनों पर्व आपस में जुड़े हुए हैं । सभी पर्वों का अंतिम लक्ष्य है परमात्म तत्व की

प्राप्ति । ये पर्व भी उसी उद्देश्य के लिए मनाये जाते हैं।''

''नवरात्रों में नव दुर्गा की पूजा क्यों करते हैं , दादाजी? ''

''मां दुर्गा अथवा भगवती प्रकृति का प्रतिरूप है जो स्त्री जाति का प्रतिनिधित्व करती हैं। इसी को रेखांकित करने के लिए मां दुर्गा , भगवती या अंबा, गौरी के रूप में स्त्री जाति की पूजा की जाती है। स्त्री सदैव पूजनीया रही है। हमारे शास्त्रों में लिखा है-

यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवता।
यत्रैतास्तु न पूज्यंते सर्वांस्तत्राफला: क्रिया:।।

इसका तात्पर्य है कि जहां स्त्रियों की पूजा (आदर-सम्मान) होती है वहां देवता निवास करते हैं लेकिन जहां उनका सम्मान नहीं होता वहां उनके समस्त कर्म निष्फल हो जाते हैं ।

नवरात्रि पर्व मातृशक्ति के सम्मान का पर्व है । साथ ही मातृशक्ति को यह आभास कराने का पर्व भी है कि वह अबला नहीं है , वह दुर्गा, रणचंडी, कात्यायनी, काली का अवतार भी है । सभी देवी देवताओं के हाथ में शस्त्र होने का एक ही अर्थ है कि जो लोग (दुष्ट) शास्त्र से नहीं मानते उन्हें शस्त्र से जीता जाना चाहिए''

''शस्त्र और शास्त्र पूजा एक साथ कैसे कर सकते हैं दादाजी? ''

''शास्त्रों की रक्षा करने के लिए ही तो शस्त्र उठाया जाता है। याद है जब एक राक्षस वेदों को चुराकर पाताल लोक में ले गया था तब भगवान विष्णु ने शास्त्रों को बचाने के लिए मत्स्य अवतार लिया था । यह कथा विष्णु पुराण में लिखी है । जब हिरण्याक्ष पृथ्वी को डुबोने के लिए पाताल लोक में ले गया था तब श्री हरि ने 'वराह अवतार' लेकर पृथ्वी की रक्षा की थी । यदि पृथ्वी नष्ट हो जाती तो शास्त्र भी नष्ट हो जाते । शास्त्र हमें जीवन पद्धति सिखलाते हैं । जैसे इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस के यूज करने की मैथेडोलॉजी उसके मैन्युअल में लिखी रहती है उसी तरह मनुष्य जीवन को जीने की मैथेडोलॉजी हमारे शास्त्रों में लिखी हुई है इसलिए शस्त्र और शास्त्र दोनों की पूजा की जाती है हमारे यहां।''

''दादाजी, कहते हैं कि रावण के दस सिर थे, क्या यह सही है?''

''रावण कहने को तो बहुत ज्ञानी था लेकिन वह पापात्मा था उसमें दस विकार भरे हुए थे जो इस प्रकार हैं - काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, मत्सर (ईर्ष्या) , अहंकार, असत्य भाषण, हिंसा और दंभ । ये दस विकार ही उसके दस सिर थे ।

''पापा , आजकल ऐसे मैसेज बहुत आते हैं कि रावण ने तो सीता को छुआ भी नहीं था फिर 'बेचारे' रावण को क्यों मारा ?'' मनु की मम्मी ने सवाल उठा दिया ।

''ये मैसेज कौन लोग भेज रहे हैं ? ये वही लोग हैं जो सनातन पर उंगली उठाते हैं, रामचरितमानस को जलाते हैं, भगवान श्रीराम के बारे में न जाने क्या क्या अनर्गल प्रलाप करते हैं। वास्तव में वे लोगों को दिग्भ्रमित करते हैं और लोग उनके प्रोपेगेंडा में आकर ऐसी बकवास को सही मान लेते हैं। उसने माता सीता का अपहरण क्यों किया? क्या उनका पूजन करने के लिए? यदि वह इतना ही देव तुल्य था तो भगवान श्रीराम ने

जब अपने दूत के रूप में युवराज अंगद को लंका में भेजा था तब रावण ने माता सीता को अंगद के साथ क्यों नहीं भेज दिया? दरअसल लोग सत्य को छुपाकर असत्य को स्थापित करना चाहते हैं। वे रावण को देवता और भगवान श्रीराम को गलत बताना चाहते हैं। रावण ने अपने भाई कुबेर की पुत्रवधू अप्सरा रंभा से बलात्कार किया था तब रंभा ने उसे श्राप दिया था कि वह किसी स्त्री को उसकी इच्छा के विरुद्ध यदि छुएगा तो उसके सिर के सौ टुकड़े हो जायेंगे। इसी भय के कारण उसने माता सीता का स्पर्श नहीं किया। जो दुष्ट अपने भाई की पुत्रवधू से बलात्कार कर सकता है वह किस स्त्री को छोड़ेगा?''

''विजयादशमी पर क्या शस्त्र पूजा करने से हिंसा नहीं बढ़ेगी।'' इस बार हरिनारायण के पुत्र बद्रीनारायण ने पूछा था।

हरिनारायण जी इस प्रश्न पर हंसे फिर उन्होंने कहा ''क्या आत्मरक्षा करना हिंसा है ? ऐसा कौन सा कानून हैं जो आत्मरक्षा को अपराध बताता है। कानून का ज्ञान नहीं रखने वाले लोग इस तरह की बातें करते हैं। यदि पड़ोसी या दुश्मन देश हमारे देश पर आक्रमण कर दे तो क्या हम उसे उपदेश सुनायें ? दुष्ट लोग शस्त्र की भाषा समझते हैं शास्त्र की नहीं । राजा के पास 'दंड' होना चाहिए या नहीं ? क्या अपराधियों को दंडित नहीं किया जाना चाहिए ? क्या उनको दंडित करना हिंसा है? यदि रास्ते में कुछ गुंडे किसी लड़की को छेड़ें तो वह लड़की क्या उन गुंडों के सामने गिड़गिड़ाती रहे या फिर वह दुर्गा का अवतार बनकर उन बदमाशों की धुनाई करे? नवरात्रि पर्व लड़कियों को दुर्गा बनने की प्रेरणा देता है । सौम्य और विनीत बनने की प्रेरणा भी देता है । जैसी परिस्थिति हो , वैसा ही व्यवहार करने की प्रेरणा देता है।''

दादाजी के उत्तर से सब लोग बहुत प्रसन्न हुए। उनकी शंकाओं का समाधान हो गया । इसके बाद सब ने शस्त्र और शास्त्रों का भलीभांति पूजन किया । आज की आवश्यकता है शस्त्र और शास्त्र दोनों का पूजन करने की । हमें अपने बच्चों को यह बात भली भांति समझानी चाहिए ।

- सेवानिवृत्त सदस्य, राजस्व मंडल, अजमेर
एवं आचार्य श्रीमद्भगवद्गीता, जयपुर

पर्यावरण संरक्षण व बुराई पर अच्छाई की विजय को दर्शाता शिव-शक्ति आराधना का लोक नृत्य 'गवरी'

■ शीतल पालीवाल

यदि आप इस समय मेवाड़ के गांवों में जाएंगे तो संभव है कि अधिकांश गांव आपको जीवंत रंगमंच के रूप में दिखाई दें। गांव के चौराहों पर कुछ लोग थाली-मदाल (मेवाड़ के पारम्परिक वाद्ययंत्र) के साथ नाचते-गाते व अभिनय करते हुए आपको दिख जाएं।

राजस्थान के लोकनृत्य-नाट्य गवरी का मंचन राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्र (उदयपुर, रामसमंद, चित्तौड़, भीलवाड़ा) में रक्षाबंधन के अगले दिन यानि भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा से आरम्भ होकर पूरे चालीस दिन तक चलता है। राजस्थान की भील जनजाति के इस उत्सव में पूरा हिंदू समाज भाग लेता है। गवरी का मंचन देखने न केवल पूरा गांव बल्कि आसपास के गांवों के लोग व उनके रिश्तेदार सभी आते हैं।

भील जनजाति स्वयं को मां शक्ति अर्थात् पार्वती के परिवारजन तथा महादेव को अपना जमाई मानती है। गवरी में दो मुख्य पात्र होते हैं- 'राईबूढ़िया' और 'राईमाता'। राईबूढ़िया को शिव तथा राईमाता को पार्वती माना जाता है। इसलिए दर्शक इन पात्रों की पूजा भी करते हैं। गवरी का मूल कथानक भगवान शिव और भस्मासुर से संबंधित है। गवरी के दौरान खेल्ये (नाट्य मंचन करने वाले कलाकार) मात्र एक समय भोजन करते हैं। गांव के हर घर से इन साधकों के लिए भोजन के रूप में सूखी सब्जी, दाल आदि ही बनती है, क्योंकि गवरी मंचन करने वाले 'खेल्ये' सवा महीने तक अपनी साधना में हरी सब्जी नहीं खाते।

नृत्य में महिला का किरदार भी पुरुष उनकी वेशभूषा धारण कर निभाते हैं। मंचन के दौरान ये लोग पांव में जूते नहीं पहनते। एक बार घर से बाहर निकलने के बाद सवा माह तक अपने घर भी नहीं जाते।

गांव के चौराहे पर, जहाँ गवरी की जाती है, वहां मां की चौकी होती है। मां की नित्य पूजा-अर्चना हेतु भोपाजी (भील पंडित) गांव में हर घर से सहयोग लेते हैं। इस दौरान गांव के हर जाति-बिरादरी के लोगों में सामूहिकता व समरसता का भाव देखते ही बनता है।

मंचन के बीच-बीच में वाणिया, पूलिया जैसे हास्य खेलों के द्वारा दर्शकों को खूब हंसाया जाता है। अंतिम दिन का खेल होता है 'किला लूटना'। इस खेल का कथानक मां काली व चित्तौड़ किले पर आधारित है। मुगल चित्तौड़ किले में मां काली के मंदिर में गौ वध का प्रयास करते हैं। मां के भक्त शक्ति के साथ इसे रोकते हैं और इस प्रकार बुराई पर अच्छाई की विजय के साथ गवरी का समापन होता है।

गवरी विसर्जन के पहले रात को जागरण होता है, जिसे गड़ावन कहा जाता है। अंतिम दिन यानी चालीसवें दिन विवाह उत्सव जैसा दृश्य होता। इसे 'वलावन' कहा जाता है। स्थानीय लोग गवरी का इस भाव से जल में विसर्जन करते हैं कि विवाह के पश्चात् मां की विदाई हो रही है और महादेव उन्हें लेने आए हैं। मां की प्रतिमा के विसर्जन के साथ ही सबकी सुख-समृद्धि की कामना की जाती है।

यह नाट्य / नृत्य प्रकृति संरक्षण की भी बात करता है। 'बड़ल्या हिंदवा' खेल में पेड़ों को हर हाल में बचाने की बात की जाती है। 'बंजारा-मीणा (ख्याल)' खेल में गांव के गोवंश, भेड़-बकरियों आदि को बचाने का संदेश दिया जाता है।

गवरी बेटियों के सम्मान की बात भी करता है। किसी गांव विशेष की गवरी पूरे मेवाड़ के उन गांवों में मंचन करती है जहां उनके पैतृक गांव की कोई बहन-बेटी ब्याही होती है। ऐसे में गवरी दल सिर्फ अपने गांव में ही अच्छी बारिश की कामना नहीं करते अपितु उन सभी जगहों पर भी अच्छी बारिश की प्रार्थना नृत्य के द्वारा करते हैं जहां उनके गांव की बहिन-बेटियां ब्याही होती हैं। बेटियों के सम्मान को दर्शाती यह अद्भुत परंपरा और कहीं देखने को नहीं मिलती। ऐसा माना जाता है कि जहां-जहां गवरी मंचित होती है वहां गौरजा देवी (पार्वती) की अनुकम्पा बरसती है और अच्छी बारिश होती है।

उदयपुर के प्रताप गौरव केन्द्र में भी गत 21 सितम्बर को गवरी का भव्य आयोजन किया गया।

(लेखिका पत्रकारिता की विद्यार्थी हैं)

अमेरिका में मोदी

जब से श्री नरेन्द्र मोदी भारत के प्रधानमंत्री बने हैं, विश्व में भारत की प्रतिष्ठा बहुत बढ़ी है। जब भी वे किसी देश में जाते हैं तो वहां रह रहे भारतीय मूल के लोगों एवं प्रवासी भारतीयों को अवश्य संबोधित करते हैं। उन्हें सुनने व देखने के लिए हजारों की संख्या में भारतीय एकत्र होते हैं। विगत 22 सितम्बर को भी उन्होंने अमेरिका के न्यूयॉर्क में भारतीय समुदाय को संबोधित किया। क्वाड सम्मेलन में भाग लेने गए भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के अमेरिका प्रवास की प्रमुख बातें-

लौटाई भारत की धरोहर : मोदी जी ने बताया कि अमेरिका ने एक दिन पूर्व ही हमारे लगभग 300 पुराने शिलालेख व मूर्तियां लौटाई हैं। अभी तक अमेरिका ऐसी 500 धरोहरें भारत को लौटा चुका है। ये कोई छोटी बात नहीं है। ये हमारी हजारों वर्षों की विरासत का सम्मान है।

अब मोबाइल का करते हैं निर्यात : एक जमाना था जब हम मोबाइल का आयात करते थे। अब हम मोबाइल निर्यातक बन चुके हैं। अब भारत किसी के पीछे नहीं चलता। अब भारत नेतृत्व करता है।

'चिप' ले जायेगी भारत को ऊँचाइयों पर: भारत प्रयत्नशील है कि विश्व में ज्यादा से ज्यादा डिवाइस (मोबाइल, लैपटॉप आदि) भारत में बनी चिप पर चलें। ये छोटी सी चिप भारत को नई ऊँचाइयों पर ले जाएगी।

भारत के नेतृत्व की सराहना : भारत के अलावा क्वाड में शामिल तीनों देशों (अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया) के नेताओं ने हिंद महासागर में भारत की भूमिका को मजबूत करने के लिए प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व की सराहना की। हिंद महासागर में हूती विद्रोहियों से जहाजों की सुरक्षा से लेकर अपहरण किए गए जहाजों को डाकुओं से छुड़ाकर भारत ने अपनी ताकत दिखाई है।

देश के लिए मरने का अवसर नहीं मिला, देश के लिए जीने का अवसर तो है : मोदी जी ने उपस्थित भारतीय समुदाय को संबोधित करते हुए कहा- स्वाधीनता के आंदोलन में करोड़ों भारतीयों ने स्वराज्य के लिए अपना जीवन खपा दिया था। उन्होंने अपना हित नहीं देखा। वे देश की स्वतंत्रता के लिए सब कुछ भूलकर अंग्रेजों से लड़ने चल पड़े। उस यात्रा में किसी को फाँसी का फंदा मिला, किसी को गोलियों से भून दिया गया। कइयों की जिंदगी जेल में खप गई।

हम देश के लिए मर नहीं पाए, लेकिन हम देश के लिए जरूर जी सकते हैं। मरना हमारा भाग्य नहीं, जीना हमारा भाग्य है। हम देश की समृद्धि के लिए जीएं।

ड्रोन खरीदने का सौदा : देश की सुरक्षा को और मजबूत करने के लिए भारत की अमेरिका से 31 एमक्यू 9बी स्काई गार्जियन और एसईए गार्जियन ड्रोन खरीदने पर बातचीत हुई। एक ड्रोन की कीमत लगभग 3 अरब डॉलर (25 हजार करोड़ रुपए) है।

क्वाड शिखर सम्मेलन

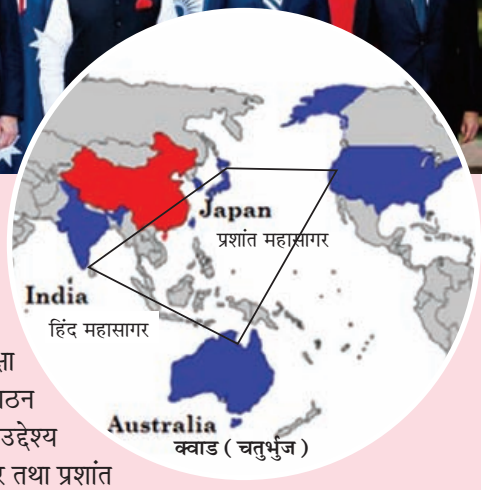

2007 में क्वाड बनाया गया। यह एक सुरक्षा सहयोग संगठन है जिसका उद्देश्य हिंद महासागर तथा प्रशांत महासागर में शांति और सहयोग को बढ़ावा देना है और चीन की विस्तारवादी नीतियों का मुकाबला करना है। इस संगठन में विश्व के मात्र चार देश भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया हैं। इन चारों देशों की सरकार के मुखिया (प्रधानमंत्री/राष्ट्रपति) गत 21 सितम्बर को अमेरिका में साथ आए और विचार-विमर्श किया। माना जाता है कि यह भारत की सुरक्षा, आर्थिक विकास और वैश्विक स्थिरता में सहायक होगा। चीन की भारत के प्रति आक्रामकता के विरुद्ध क्वाड एक महत्वपूर्ण रणनीतिक साझेदारी को मजबूती देता है।

भारत बना एशिया की तीसरी महाशक्ति

भारत को अब एशिया की तीसरी महाशक्ति बताया जा रहा है। अमेरिका का एशिया में प्रभाव को देखते हुए इसे पहले स्थान पर रखा गया। दूसरे स्थान पर चीन को महाशक्ति माना गया है। इस प्रकार से जापान और रूस को पीछे छोड़कर भारत एशिया में एक महाशक्ति के रूप में मान्यता प्राप्त कर रहा है। अर्थव्यवस्था, सैन्य ताकत, कूटनीति और सॉफ्ट पावर (दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता) के आधार पर ऑस्ट्रेलियाई थिंक टैंक लोबी इंस्टीट्यूट ने अपनी ताजा रिपोर्ट में यह घोषणा की है।

शतरंज के ऑलिम्पियाड में स्वर्ण पदक

ओलंपिक खेलों में शतरंज शामिल नहीं है। शतरंज ऑलिम्पियाड का अलग से आयोजन पिछले 100 वर्षों से हो रहा है। हंगरी के बुडापेस्ट में हुए 45वें ऑलिम्पियाड में पहली बार भारत की पुरुष एवं महिला टीमों ने स्वर्ण पदक प्राप्त किया। भारत के डी गुकेश और अर्जुन एरिगेसी तथा महिला श्रेणी में दिव्या देशमुख और वंतिका अग्रवाल को सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का पुरस्कार दिया गया।

हिंदू आस्था पर कुठाराघात

तिरुपति मंदिर के प्रसाद में गाय की चर्बी व मछली तेल

भारत के प्रसिद्ध तिरुपति बालाजी मंदिर (आंध्र प्रदेश) में मंदिर की ओर से दिए जाने वाले प्रसाद के लड्डुओं में पशु चर्बी की मिलावट का सनसनी खेज मामला सामने आया है। प्रसाद के सेंपल गुजरात स्थित राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के 'पशुधन एवं खाद्य विश्लेषण एवं अध्ययन केन्द्र' भेजे गए थे। जांच में प्रसाद में उपयोग होने वाले घी में सोयाबीन, सूरजमुखी, जैतून, रेपसीड वनस्पति तेलों के साथ ही बीफ टैलो (गाय की चर्बी), लार्ड (सूअर की चर्बी) तथा मछली तेल भी पाया गया।

इस समाचार से पूरा देश और विशेषकर पूरा हिंदू समाज सन्न रह गया है। आंध्र प्रदेश के वर्तमान मुख्यमंत्री चन्द्रबाबू नायडू का आरोप है कि पिछली सरकार के मुख्यमंत्री जगन रेड्डी के समय यह घपला किया गया जब कई बरसों से आ रहे नन्दनी घी को हटाकर सस्ते दामों पर अन्य कंपनियों से 320 रुपए प्रति किलो के भाव में घी लिया जाने लगा। स्पष्ट है कि इतने कम रुपयों में शुद्ध देशी घी मिलना असंभव ही था। तो बड़े पैमाने पर प्रसादम् में घपले से इंकार नहीं किया जा सकता। करोड़ों हिंदुओं की आस्था को चोट पहुंचाई गई।

अब देश के अन्य मंदिरों में भी प्रसाद की शुद्धता को लेकर जागरूकता आ रही है।

इन विवादों के मध्य हिंदू संगठनों ने 'सनातन धर्म रक्षा बोर्ड' की स्थापना की मांग की है। आंध्र प्रदेश के उप मुख्यमंत्री पवन कल्याण ने इस मांग का समर्थन करते हुए कहा है, ''यह समय है कि हिंदू एकजुट हों और अपने धर्म की रक्षा के लिए खड़े हों। सनातन धर्म की पवित्रता बनाए रखने के लिए एक मजबूत और सक्षम बोर्ड की आवश्यकता है।''

आवश्यकता इस बात की भी है कि हिंदू मंदिरों को सरकारी शिकंजे से स्वतंत्र कराकर उनके प्रबंध तथा प्राप्त भेंट-चढ़ावे की उचित व्यवस्था की जावे।

विश्व हिंदू परिषद् की तिरुपति में 23 सितम्बर को सम्पन्न बैठक में शीर्ष कोर्ट (सर्वोच्च न्यायालय) से मांग की गई है कि वह इस मामले में स्वत: संज्ञान ले और दोषियों की पहचान के लिए जांच शुरू करे। विहिप ने कहा है कि इस मामले में लापरवाही और देरी की कोई गुंजाइश नहीं है क्योंकि ऐसा होने पर हिंदुओं द्वारा देशव्यापी आंदोलन छेड़ा जा सकता है।

हिंदू मंदिरों पर हमला

प्राप्त जानकारी के अनुसार जनवरी 2024 से लेकर अगस्त 2024 तक राजस्थान के 26 मंदिरों को निशाना बनाया गया है। कहीं मूतियां खंडित की गई तो कई मंदिर की बुर्ज या दीवार को तोड़ने का प्रयास हुआ।

इस सूची में भरतपुर की 4, अलवर और उदयपुर की 3-3, अजमेर व भीलवाड़ा की 2-2 तथा सिरोही, बारां, जैसलमेर, बीकानेर, गंगापुर सिटी, दौसा, डूंगरपुर, कोटपूतली, करौली एवं जयपुर की 1-1 घटनाएं शामिल हैं। यानी, राजस्थान के लगभग हर क्षेत्र में ऐसी घटनाएं हुई हैं।

विश्व हिंदू परिषद् व अन्य हिंदू संगठनों ने सभी स्थानों पर सर्व समाज को साथ में लेकर रोष प्रकट किया है। कहीं-कहीं अराजक, जिहादी तत्वों की गिरफ्तारियां भी हुई है। परंतु यक्ष प्रश्न है कि सरकार की ओर से कठोर कार्रवाई क्यों नहीं दिख रही है?

नमाज के समय हिंदू न करें पूजा-पाठ व लाउड-स्पीकर पर भजन

बांग्लादेश की अंतरिम सरकार में गृह मामलों के सलाहकार (एक प्रकार से गृहमंत्री) लेफ्टिनेंट जनरल (रि.) मो. जहांगीर आलम ने घोषणा की है कि अब से बांग्लादेश में अजान और नमाज के दौरान हिंदू समुदाय के लोगों के लिए पूजा-पाठ करना और लाउड-स्पीकर पर भजन सुनना प्रतिबंधित होगा। यदि कोई हिंदू इस नियम का उल्लंघन करेगा तो पुलिस उसे बिना वारंट के गिरफ्तार कर लेगी। उन्होंने कहा कि 9 से 13 अक्टूबर के मध्य बांग्लादेश में होने वाली दुर्गा पूजा और इस निमित्त बने पंडाल पर भी यह प्रतिबंध लागू रहेगा।

बांग्लादेश तो मुस्लिम बहुल देश है, परंतु जो हिंदू बहुल देश है यानी- भारत, वहां भी प.बंगाल जैसे राज्यों में मुसलमानों को ही प्राथमिकता दी जाने के समाचार आते हैं। 2017 में दुर्गा विसर्जन का जुलूस और मोहर्रम का जुलूस एक ही दिन निकलना था। ममता बनर्जी की सरकार ने यह घोषणा की थी कि पहले मोहर्रम का जुलूस निकलेगा और बाद में अगले दिन दुर्गा विसर्जन किया जाएगा।

क्यों है हिंदुओं की यह दयनीय स्थिति? क्या है इसका समाधान? विचार तो करना ही होगा। क्या इसका समाधान सर्व हिंदू समाज की एकता से निकलेगा?

देशभर में गणेशोत्सव के दौरान हुए जिहादी हमले

हिंदू समाज ने किया प्रतिकार

हिंदू समाज के त्योहारों, उत्सवों व शोभायात्राओं पर जिहादी तत्वों का दुस्साहस इतना बढ़ गया है कि अब इन हमलों में छोटे नाबालिग बच्चों से लेकर महिलाओं की संलिप्तता भी सामने आ रही है।

ताजा मामला देश भर में मनाए जा रहे गणेशोत्सव का है जहाँ कट्टरपंथियों ने गणेश पूजा के दौरान तथा विसर्जन के समय कहीं पत्थरबाजी की, कहीं मारपीट-आगजनी तो कहीं मूर्तियों को तोड़ा गया। कहीं पूजा पंडाल में अपशिष्ट फेंक कर हिंदू श्रद्धा को चोट पहुँचाई। इन हमलों में सैंकड़ों लोगों के गंभीर रूप से घायल होने के समाचार भी प्राप्त हुए हैं। हिंदू समाज द्वारा सब स्थानों पर सामूहिक प्रतिकार करने के कारण उपद्रवी तत्वों को पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया जा रहा है।

शाहपुरा (भीलवाड़ा) गणेश पूजा पंडाल पर मृत जानवरों के अपशिष्ट फेंके गए। पूर्व में जहाजपुर में भी जलझूलनी एकादशी पर निकल रही यात्रा पर मस्जिद से पत्थरबाजी की गई। यहीं के एक उपनगर सांगानेर में महोत्सव के दौरान चल रहे गरबे में पत्थर फेंके गए। इस मामले में पुलिस ने फिरोज अली (27), सैफान (19)व मोहम्मद बिलाल (32) को गिरफ्तार किया है। बाद में तीनों को न्यायिक अभिरक्षा में भेज दिया गया। (14 सितम्बर)

सूरत (गुजरात) में 2 मुस्लिम महिलाओं रूबीना पठान व लाइमा शेख और उनके दो बच्चों (दोनों नाबालिग) को गणेश मूर्तियों पर पत्थर फेंकने के लिए उकसाने के आरोप में गिरफ्तार किया है। घटना लालगेट की है जहां हीरालाल की दुकान में रखी 10 मूर्तियों को तोड़ा गया। यहीं के सैयदपुरा मोहल्ले में 6 युवकों ने मस्जिद से गणेश पंडाल पर पथराव किया। (10 सित.)

कच्छ (गुजरात) में मुस्लिम उपद्रवियों ने भगवान बप्पा की मूर्ति को निशाना बनाते हुए हमला किया, जिससे प्रतिमा की सूंड खंडित हो गई। साथ ही पंडाल के पास स्थित हिंदू मंदिर पर इस्लामिक झंडा फहराया गया। पुलिस ने गुलाम हुसैन जाफर, आसिफ, आदिल रमजान को गिरफ्तार किया है। भरूच व बड़ौदा में भी इस प्रकार की घटनाएं हुई हैं। (11 सित.)

त्रिलोकपुरी (दिल्ली) में विसर्जन से लौट रहे भक्तों की भीड़ पर हथियारों से लैस मुस्लिम भीड़ ने हमला किया। हिंदू महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार किया गया।

लोहदरगा (झारखण्ड) में वाल्मीकि नगर में गणेशोत्सव के लिए सार्वजनिक स्थान पर पूजा पंडाल बनाने पर भीड़ में आए मुस्लिमों ने हमला किया। (6 सित.)

लखनऊ (उत्तर प्रदेश) में चिनहट के गंगा विहार कालोनी के गणेश पंडाल में 'अल्लाह-हु-अकबर' के नारे लगाते हुए पत्थरबाजी की और प्रतिमा के पास रखे मंगल कलश को तोड़ दिया।

बलरामपुर (उत्तर प्रदेश) में गणेश पंडाल के आगे हरे झण्डे लहराते हुए ''हिंदुस्तान में रहना है तो ख्वाजा ख्वाजा कहना होगा'' के नारे लगाए गए।

झांसी (उत्तर प्रदेश) में मदारगंज मौहल्ले में विसर्जन के लिए जाते भक्तों से गाली-गलौज व महिलाओं के साथ अश्लील हरकतें की गई। इसके अलावा महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, कर्नाटक व छत्तीसगढ़ आदि राज्यों में भी ऐसी घटनाएं घटित होने के समाचार हैं। *(मनोज गर्ग)*

कोटा में बारावफात के जुलूस में

मुसलमानों ने तिरंगे में लगाए चांद-तारे

हाल ही में देशभर में मनाए गए ईद मिलाद-उन-नबी (बारावफात) के जुलूसों में कोटा (राजस्थान) से लेकर छपरा (बिहार) तथा महाराष्ट्र के नंदुरबार तक राष्ट्रीय ध्वज का अपमान करने की घटनाएं सामने आई हैं। बरेली के नवाबगंज में जुलूस के दौरान मुसलमानों ने सरदार पटेल की प्रतिमा को जूतों की माला पहनायी। जुलूसों में तिरंगे का उपयोग करते समय अशोक चक्र को हटाकर उसके स्थान पर चाँद-तारे का प्रतीक लगाया गया, जिससे देशवासियों में गहरा आक्रोश फैल गया है। जानकारी के अनुसार वायरल वीडियो में कोटा तथा बिहार के छपरा में निकल रहे जुलूस में तिरंगे झंडे में चांद-तारे बने हुए थे। पुलिस ने अज्ञात लोगों के विरुद्ध राष्ट्रीय गौरव अपमान निवारण अधिनियम 1971 की धारा 2 के अंतर्गत मामला दर्ज किया है।

इन घटनाओं को लेकर देशभर में नाराजगी है। लोगों का मानना है कि ऐसे कृत्य भारत की अखंडता और एकता पर चोट करते हैं। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है और दोषियों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई करने की बात कही है।

बारां में जुलूस के दौरान हंगामा : बारावफात के अवसर पर बीती 16 सितम्बर को इस्लामी कट्टरपंथियों की भीड़ ने पहले से तय किए गए मार्ग को छोड़कर दूसरे रास्ते पर जाने का जबरन प्रयास किया। पुलिस ने परिवर्तन का विरोध किया, जिसके बाद हालात बिगड़ गए। देश में कुछ मुसलमानों की अराजक हरकतों के चलते बार-बार सामाजिक सौहार्द बिगड़ता है और साम्प्रदायिक तनाव की स्थिति बनती है। हाल ही में वक्फ संशोधन बिल के विरुद्ध मुस्लिम समुदाय की गोलबंदी और गणेश शोभायात्राओं पर हुए हमलों से वातावरण कई बार खराब हुआ। दुखद बात यह है कि मुस्लिम समाज अब ऐसी हरकतें करने में नाबालिग बच्चों का उपोग कर रहा है।

जयपुर

अजमेर के घृणित सेक्स स्कैंडल के दोषियों को फांसी दी जाए

सर्व हिंदू समाज ने दिया धरना

राजस्थान के अजमेर शहर में आज से 32 वर्ष पूर्व 1992 में एक ऐसा घिनौना सेक्स कांड हुआ जिसकी जानकारी संभवत: आज की युवा पीढ़ी को नहीं होगी। बताया जाता है कि 250 से अधिक स्कूल जाने वाली 11 से 20 वर्ष तक की बच्चियों का ब्लेकमेल करते हुए उनका यौन शोषण किया गया। यह कुकृत्य करने वालों में अजमेर दरगाह के खादिम (दरगाह की सेवा में रत) परिवार के लोगों सहित कांग्रेस के कम से कम दो नेता शामिल थे।

बताया जाता है कि आरोपियों की फिएट कार लड़कियों के स्कूल के बाहर खड़ी रहती थी जो अलग-अलग दिन अलग-अलग लड़कियों को शहर के अलग-अलग ठिकानों पर ले जाती थी जहां उनका रेप किया जाता था। जब मामला खुला तो कई लड़कियों ने आत्महत्या कर ली। बहुत सी लड़कियों

के परिवारों ने अजमेर छोड़कर अन्यत्र रहना शुरू कर दिया।

इस मामले में इशरत अली, अनवर चिश्ती, मोइजुल्लाह और शमशुद्दीन को 2003 में आजीवन जेल की सजा मिली थी जिसे सर्वोच्च न्यायालय ने 10 वर्ष के कारावास में बदल दिया। अब ये सजा पूरी कर रिहा हो चुके हैं। एक अन्य आरोपी अल्माश विदेश भाग गया है। पिछले दिनों अन्य 6 को पोक्सो कोर्ट ने आजीवन जेल की सजा सुनाई जिनमें नफीस चिश्ती, नसीम, सलीम चिश्ती, इकबाल भाटी आदि हैं। फारुख चिश्ती युवा कांग्रेस का अध्यक्ष तथा नफीस चिश्ती उपाध्यक्ष था।

आरोपियों ने एक व्यापारी परिवार के बेटे के साथ कुकर्म कर अश्लील फोटो खींच ली थी तथा इसके आधार पर ब्लेक मेल करते हुए पीड़ित की महिला मित्र को पोल्ट्री फार्म पर बुलाया। उसका दुष्कर्म कर फोटो बनाते हुए उसको भी ब्लेकमेल करते हुए उसकी सहेलियों को बुलाकर दुष्कर्म किया। इस प्रकार यह घृणित सिलसिला चला। आरोपियों ने सारी नैतिकता त्याग दी और एक ऐसा कांड किया जिससे सैकड़ों हिंदू लड़कियों का जीवन बर्बाद हो गया।

गत 6 सितम्बर को जयपुर के सर्व हिंदू समाज की ओर से सोडाला चौराहे पर सामूहिक धरना दिया गया तथा बलात्कारियों पर फिर से मुकदमा चलाकर फांसी की सजा देने की मांग की गई। हिंदू जागरण मंच के श्री सतीश अग्रवाल ने राज्य सरकार से मांग की है कि इस निर्णय के विरुद्ध उच्च न्यायालय में अपील करके दोषियों को फांसी दिलाई जाए।

सर्व हिंदू समाज का विराट शक्ति प्रदर्शन, मदरसे के नाम भूमि आवंटन निरस्त

मेवाड़ की पावन धरा मावली में प्रभु श्री एकलिंग नाथ जी की अगुवाई में सर्व हिन्दू समाज ने गत 23 सितम्बर को आक्रोश रैली निकाली और कस्बे में पूर्ववर्ती राज्य सरकार द्वारा मदरसे के लिए अवैध रूप से भूमि आवंटन का कड़ा विरोध करते हुए आवंटन निरस्त करने की मांग की जिसे अंतत: स्वीकार कर लिया गया। पूर्व की राज्य सरकार ने जल भराव वाली विवादित भूमि को मदरसे के नाम पर आवंटित कर दिया था जिसे निरस्त करने के लिए प्रशासन को समय-समय पर विभिन्न संगठनों द्वारा अवगत कराया गया। परन्तु बार-बार चेताने के उपरांत प्रशासन ने इसे गंभीरता से नहीं लिया। विवश होकर सर्व हिन्दू समाज को सड़क पर उतरना पड़ा।

उदयपुर

इस आंदोलन के अंतर्गत सर्व हिन्दू समाज ने हिन्दू शक्ति संगम और आक्रोश रैली निकाल कर अनिश्चित कालीन धरना एवं प्रदर्शन किया, जिसमें बच्चे, बुजुर्ग और महिलाओं-पुरुष सहित सभी जाति बिरादरियों के लोगों ने भाग लिया। इस विराट प्रदर्शन में संत समाज ने भी सहभागिता की और अवैध आवंटन के विरुद्ध आक्रोश जताया। सुबह 9 बजे से ही पुराने बस स्टैंड पर लोगों की भीड़ उमड़नी शुरू हो गई थी। 11 बजे तक तो जैसे पूरे मावली नगर में जनसैलाब छा गया।

इस दौरान प्रशासन एवं सरकार से लगातार संवाद होने के बाद जिला कलेक्टर को आवंटित भूमि को निरस्त करने का आदेश देना पड़ा।

लखनऊ

रानी अहिल्याबाई होल्कर ने संत जैसा जीवन जीते हुए भारत को सांस्कृतिक एकता के सूत्र में बांधा

लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर सामाजिक परिवर्तन की वाहक थीं। उन्होंने घुमन्तू समाज के उत्थान के लिए काम किया। भीलों के लिए भील कौड़ी की शुरुआत की और उन्हें कृषि के लिए प्रेरित किया। वह युद्ध क्षेत्र में स्वयं जाकर सैनिकों का उत्साह बढ़ाती थीं। उन्होंने महिलाओं की सेना का गठन किया। राज्य की आय कैसे बढ़ सकती है, इसके लिए आर्थिक सुधार किये। महारानी ने उद्योग, व्यापार व आर्थिक उन्नति का ढांचा तैयार किया।

यह कहना है अ.भा. साहित्य परिषद के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री श्री मनोज कुमार का। वे गत 17 सितम्बर को साहित्य परिषद के अवध प्रांत द्वारा लखनऊ में आयोजित संगोष्ठी को

संबोधित कर रहे थे।

सह संगठन मंत्री ने कहा कि संत स्वरूपा पुण्यश्लोका लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर साक्षात देवी थीं। संत जैसा जीवन जीते हुए उन्होंने साधना के साथ शासन किया। उनकी राजाज्ञाओं पर 'श्री शंकर आज्ञा' लिखा रहता था। गायों को चरने के लिए भूमि खाली छोड़ने और पक्षियों व मछलियों के लिए दाना डालने की व्यवस्था थी। अहिल्याबाई 'सर्वभूत हिते रता' अर्थात् सबके कल्याण के लिए वह काम करती थीं। पूरी प्रजा उन्हें माँ मानती थी। इसलिए वह लोकमाता कहलायीं। सांस्कृतिक पुनरुत्थान की दृष्टि से देखें तो उन्होंने मुगल साम्राज्य के कारण ध्वस्त हो चुके तीर्थस्थलों का पुनर्निर्माण कराया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अखिल भारतीय साहित्य परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. सुशील चन्द्र त्रिवेदी ने कहा कि मुगल साम्राज्य के विपरीत छोटे राज्य बनाकर संघर्ष करके अहिल्याबाई होल्कर ने देश में सांस्कृतिक एकता का परचम लहराया। डॉ. त्रिवेदी ने कहा पिछले 2 हजार वर्षों में देश में सांस्कृतिक एकता के लिए अहिल्याबाई ने सर्वाधिक कार्य किए।

पुस्तक समीक्षा

क्रांतिकारी डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार

श्री विजय नाहर द्वारा लिखित पुस्तक ''क्रांतिकारी डॉ.केशव बलिराम हेडगेवार'' का राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष से पूर्व पाठक वृंद के सम्मुख आना निश्चित ही प्रेरणास्पद और स्तुत्य प्रयास है। पुस्तक का उद्देश्य राष्ट्रचेता- युगचेता डॉ.केशव राव हेडगेवार जी की राष्ट्रोन्नमुखी-बहुमुखी साधना को आलोकित करना है। कुछ छद्म राजनेता अपनी कुत्सित, संकीर्ण विचारधारा के कारण संघ पर आरोप लगाते रहे हैं कि स्वतंत्रता आंदोलन में संघ का कोई योगदान नहीं रहा, इसका लेखक ने इस पुस्तक में तथ्यात्मक एवं तर्कसंगत उत्तर दिया है।

लेखक : विजय नाहर
मूल्य : 150 रुपए **पृष्ठ :** 138
प्रकाशक :
भारतीय इतिहास संकलन योजना, पाली, राजस्थान

डॉ.हेडगेवार ने गांधीजी के असहयोग आंदोलन में बढ़-चढ़ कर भाग लिया और जेल गए। वे तत्कालीन मध्य प्रांत कांग्रेस के सहमंत्री रहे। अध्याय तीन और चार डॉक्टर जी के संघ स्थापना से पूर्व के सार्वजनिक जीवन के अनुभवों से संबंधित हैं।

पुस्तक में संघ स्थापना से पूर्व उनके क्रांतिकारी जीवन के पक्ष को विस्तार से उजागर करने का विजय जी नाहर ने अभिनव प्रयास किया है। पुस्तक में उल्लेख आया है कि संघ स्थापना के पश्चात् भी उनका क्रांतिकारियों से आत्मीय संबंध रहा है। इसका वर्णन पुस्तक के अध्याय सात में आया है।

डॉ.हेडगेवार की उत्कट इच्छा थी कि वे जीते जी अपनी आंखों से भारत को स्वतंत्र रूप में देख सकें। डॉ. साहब की जिजिविषा इतनी प्रबल थी कि सन् 1940 में जीवन दीप बुझने तक वे अविचल, दृढ़भाव से राष्ट्र को स्वतंत्र करवाने के लिए संकल्पित और प्रयासरत रहे। अपनी वेदना कभी-कभी तीव्र पीड़ा जनित अवस्था में व्यक्त कर देते थे '' समय तीव्र गति से बीतता जा रहा है और हम लक्ष्य तक नहीं पहुँचे।''

पुस्तक की भूमिका प्रसिद्ध विद्वान डॉ.देव कोठरी ने लिखी है तथा पाथेय कण के प्रबंध संपादक रहे माणक जी ने भी पुस्तक की विषयवस्तु तथा उपादेयता पर टिप्पणी करते हुए कामना की है कि यह पुस्तक अधिकाधिक पाठकों तक पहुँचेगी।

*समीक्षक : **सीताराम व्यास,** सेवानिवृत्त सह आचार्य, रोहतक*

उत्तर : जांचें कि आप कितने ज्ञानवान हैं? - 1.गुजरात 2. 12 सितम्बर,1897 3. रॉयल इंडियन एयरफोर्स 4. अजंता की गुफाएं 5. मराठा 6. डेविन 7. श्रीविजयपुरम 8. जीपीटी 9. 29 10. ऋग्वेद

गुणकारी तुलसी

■ **प्रो. (डॉ.) गोविन्द सहाय शुक्ल**

तुलसी के लिए आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रंथ 'भावप्रकाश निघंटु' में कहा गया है : -*तुलसी सुरसा ग्राम्या सुलभा बहुमञ्जरी।*
अपेतराक्षसी गौरी भूतघ्नी देवदुन्दुभिः।।

तुलसी कटुका तिक्ता ह्रद्योष्णा दाहपित्तकृत् ।
दीपनी कुष्ठकृच्छ्रास्त्रपार्श्वरुक्कफवातजित् ॥
शुक्ला कृष्णा च तुलसी गुणैस्तुल्या प्रकीर्त्तिता ॥

(भावप्रकाश / निघंटु / पुष्पवर्ग-62 व 63)

अर्थात् तुलसी सुरसा(अच्छे व गुणकारी रस के कारण), ग्राम्या(प्रत्येक घर में उपलब्ध), सुलभा (सहज उपलब्ध), बहुमंजरी (अनेक सुन्दर मंजरीयुक्त), अपेतराक्षसी (कृमिनाशक सन्दर्भ में) ,भूतघ्नी (जीवाणु नाशक) देवदुंदुभि (देवप्रिय) है। तुलसी का स्वाद कटु अर्थात् चरपरा एवं तिक्त अर्थात् कड़वा होता है ।

तुलसी हृदय के लिए हितकर, उष्ण स्वभाव, पित्तवर्धक(शरीर में गर्मी व अम्लता करने वाली), दीपन अर्थात् भूख बढ़ाने वाली, त्वचा रोग, मूत्र से सम्बंधित रोगों में, रक्त सम्बंधित रोगों में, पसली की पीड़ा में (अत्यधिक खांसी के कारण) उपयोगी एवं कफ तथा वात नाशक है। सफेद तथा काली दोनों तुलसी गुणों में समान होती है।

प्रयोग 1. मौसमी बुखार से बचने के लिए - 5 तुलसी के पत्ते+2 लवंग + 2 पिप्पली को पीसकर, 1 ग्राम मुलेठी + 1 चम्मच मिश्री+2 इलायची का काढ़ा बनाकर सुबह खाली पेट पीने से शरीर में शक्ति का संचार होता है। इसका प्रयोग दिन में एक बार ही करें।

2. रोगप्रतिरोधक क्षमता - 3 तुलसी के पत्ते + 2 काली मिर्च, दोनों को घी में भुनकर, 1 ग्राम हल्दी व 1 चम्मच शहद के साथ लेने से रोगप्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है। इसका प्रयोग भी कम मात्रा में सुबह खाली पेट ही करना चाहिए। जिनके सुबह अम्ल ज्यादा बनता हैं, इसका प्रयोग वो नहीं करें ।

3. अजीर्ण (अपच) - आधा चम्मच तुलसी रस + आधा ग्राम पिप्पली चूर्ण को शहद मिलाकर खाने के बाद लें।

4. अग्निमांद्य (भूख की कमी) - छाछ में काली मिर्च चूर्ण + 5 पत्ते तुलसी व काला नमक डालकर खाने से 1 घंटे पहले पीएं।

5. अतिसार (दस्त) - तुलसी के रस में+जायफल चूर्ण (आधा से एक ग्राम) मिलाकर पीना अतिसार में लाभदायक है।

6. छर्दि (उल्टी) - तुलसी रस में + 1 चम्मच इलायची दानों का चूर्ण मिलाकर पीने से उल्टी बंद हो जाती है।

7. निम्न रक्तचाप - कालीमिर्च 3-5 दाने + 5 से 7 तुलसी पत्र + 10-15 किशमिश को चबाकर लेना लाभकारी होता है। तुलसी की माला धारण करने से हृदय को बल मिलता है। सुबह-शाम खाने से एक घंटे पहले इसका प्रयोग करना चाहिए।

8. स्त्री रोग- तुलसी एवं नीम की पत्तियों का रस 1-1 चम्मच शहद को मिलाकर खाने से पहले लेने से प्रसूता का दूध शुद्ध होता है।

9. एक चम्मच तुलसी का रस व शहद मिलाकर प्रातः काल खाली पेट सेवन करने से कोलेस्ट्रॉल नियंत्रित रहता है।

10. 20 ग्राम तुलसी के सूखे पत्ते, 20 ग्राम अजवायन, 20 ग्राम सेंधा नमक मिलाकर चूर्ण बना लें, 3 ग्राम चूर्ण गुनगुने पानी के साथ लेने से जुकाम, खांसी में राहत मिलती हैं।

ध्यान योग्य बिंदु - उष्ण गुण प्रधान होने के कारण, अधिक मात्रा में लेने पर शरीर में पित्त को बढ़ाती है।

(विशेष : किसी रोग में प्रयोग से पूर्व वैद्यकीय सलाह अवश्य लें)

(विभागाध्यक्ष, रसशास्त्र एवं भैषज्यकल्पना विभाग,
पीजीआईए, जोधपुर)

संघ के सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबाले जैसलमेर से लगते सीमा क्षेत्र में बीएसएफ के अधिकारियों-जवानों से वार्तालाप करते हुए (सीमा जनकल्याण समिति की बैठक, दिनांक 25 सितम्बर)

संघ के अ.भा.सह प्रचार प्रमुख श्री प्रदीप जोशी पर्यावरण संरक्षण की बलिदान भूमि खेजड़ली के स्मारक पर पहुँचे। उनके साथ खड़े हैं जोधपुर प्रांत प्रचारक श्री विजयानन्द, सह प्रांत प्रचारक श्री राजेश कुमार, प्रांत प्रचार प्रमुख श्री पंकज कुमार व अन्य। (14 सितम्बर)

घोर विपत्ति में भी धैर्य और धर्म का साथ न छोड़ने वाली माता जानकी

▪ इंदुशेखर 'तत्पुरुष'

जनकनंदिनी सीता माता भारत की नारियों का सर्वोच्च आदर्श हैं। सीताजी का उज्ज्वल चरित स्त्रियों को सच्चरित्र, साहसी और निर्भय बनने की प्रेरणा देता है। घोर विपत्ति में भी धैर्य और धर्म का साथ न छोड़ने की सीख सीताजी से मिलती है। हिंदू उन्हें जगज्जननी के रूप में पूजते हैं, जिनकी कृपा से जीवन में सौभाग्य और मंगल की अभिवृद्धि होती है। मान्यता है कि त्रेतायुग में राक्षसों का संहार करने के लिए भगवान विष्णु और लक्ष्मी जी ने ही राम और सीता के रूप में अवतार धारण किया था।

सीताजी मिथिलापुर के राजा सीरध्वज की पुत्री थी। सीरध्वज को ही जनक और विदेह के नाम से भी जाना जाता है। इसीलिए सीताजी भी जानकी और वैदेही नाम से प्रसिद्ध हुई। इन्हीं राजा जनक के कारण मिथिलापुर को जनकपुरी नाम मिला।

कहते हैं कि सीताजी धरती माता की पुत्री हैं, जो राजा जनक को खेत में हल चलाते समय धरती की कोख से प्राप्त हुई थीं। राजा जनक ने सीता जी का पालन-पोषण अपनी औरस कन्या से भी बढ़कर लाड़ प्यार से किया। सीताजी के बड़ी होने पर राजा जनक ने उनका स्वयंवर रचाया। स्वयंवर की शर्त के अनुसार श्रीराम द्वारा शिव धनुष भंग कर दिए जाने पर सीताजी का राम के साथ विवाह हो गया और वे अयोध्या आ गईं।

अयोध्या में जब राम को राजगद्दी के स्थान पर वनवास दे दिया गया तो सीताजी भी राम के साथ वनगमन को तैयार हो गईं। राम ने उन्हें अयोध्या में ही रह जाने को कहा। किंतु धर्मपरायण सीता ने राजमहल की सुख-सुविधाओं को त्यागते हुए, वन के घोर कष्टों में रहना स्वीकार किया और अपने पति के साथ वनगमन को परम धर्म माना। वाल्मीकि रामायण में वे एक साहसी स्त्री की तरह राम से कहती हैं कि, 'हे राम, यदि आप दुर्गम वन को जाते हो तो मैं भी वन के कुश-कंटकों को कुचलती हुई आपके आगे-आगे चलूंगी।'

यदि त्वं प्रस्थितो दुर्गं वनमद्यैव राघवः।
अग्रतस्ते गमिष्यामि मृद्नन्ति कुशकंटकान्।।

जब वनवास काल में राक्षसराज रावण ने छल-बलपूर्वक उनका हरण कर, उनको लंका में बंदी बना लिया और अत्यधिक त्रास दिया तो भी वे अपने धर्म से नहीं डिगी।

वनवास पूर्णकर राम द्वारा अयोध्या का राजमुकुट धारण करने पर माता सीता ने अयोध्या की महारानी का सम्मान पाया। जब महाराजा राम ने राजधर्म की मर्यादा के हित लोकमत की रक्षा हेतु विवश होकर सीता का परित्याग कर दिया तो भी वे विचलित नहीं हुईं। सीताजी उस समय गर्भवती थी। उन्होंने महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में रहते हुए दो बालक, लव और कुश को जन्म दिया। धैर्यपूर्वक दोनों बालकों का क्षत्रियोचित विधि से पालन-पोषण कर उनको उत्तम शिक्षा दी। लव-कुश की वीरता एवं पराक्रम माता सीता की कठोर साधना का ही परिणाम था। धरती की कोख से प्रकट हुई माता सीताजी अपनी लीला पूर्ण हो जाने पर धरती की कोख में ही समा गईं।

(लेखक वरिष्ठ साहित्यकार हैं)

आगामी पक्ष के विशेष अवसर
(16 से 31 अक्टूबर, 2024)
(आश्विन शु.14 से कार्तिक कृ.14 तक)

जन्म दिवस

आश्विन पूर्णिमा (17अक्टूबर)-महर्षि वाल्मीकि
कार्तिक कृ.2(19 अक्टू.)-चौथे गुरु रामदास
19 अक्टूबर(1914)- आचार्य तुलसी
21अक्टू.(1830)- प्रथम सर्वेयर नैनसिंह रावत
21 अक्टूबर(1925)- हरवंश लाल ओबराय
27 अक्टूबर (1670)- वीर बन्दा बैरागी
28 अक्टूबर (1867)- भगिनी निवेदिता (सेवा दिवस)
कार्तिक कृ.13(30 अक्टू.)-भगवान धनवन्तरी
कार्तिक कृ.13(30 अक्टू.)- तीर्थंकर पद्मप्रभु
30 अक्टूबर (1919)- मोरोपंत पिंगले
30 अक्टूबर (1909)- वैज्ञानिक डॉ. होमी भाभा
31 अक्टूबर(1875)- सरदार वल्लभभाई पटेल (राष्ट्रीय एकता दिवस)

बलिदान दिवस / पुण्यतिथि

16 अक्टू. (1799)- वीर कट्टबोम्मन को फांसी
24 अक्टू. (2006)- श्री धर्मपाल की पुण्यतिथि

महत्वपूर्ण घटनाएं / अवसर

17 अक्टूबर (1947)- श्रीगुरुजी की महाराजा हरिसिंह से ऐतिहासिक भेंट
21 अक्टू.(1943)- आजाद हिंद सरकार की घोषणा
26 अक्टू.(1947)- जम्मू-कश्मीर का भारत में विलय
29 अक्टू. (1915)-अफगानिस्तान में पहली बार आजाद हिंद सरकार की स्थापना
30 अक्टू.(1990)- श्री रामजन्मभूमि पर कारसेवा

सांस्कृतिक पर्व / त्योहार

20 अक्टूबर- करवा चौथ
29 अक्टूबर-धनतेरस
30 अक्टूबर- रूप/नरक चतुर्दशी

पंचांग- आश्विन (शुक्ल पक्ष) 3 से 17 अक्टूबर, 2024 तक

शारदीय नवरात्र प्रारम्भ - 3 अक्टूबर, **चतुर्थी व्रत** -6 अक्टूबर, **छठ् पूजन व मेला (आमेर जयपुर)** - 8 अक्टूबर, **दुर्गाष्टमी** - 11 अक्टूबर, **शारदीय नवरात्र समाप्त** - 12 अक्टूबर, **पापाकुंशा एकादशी व्रत** - 13 अक्टूबर, **पंचक प्रारम्भ** -13 अक्टूबर (दोपहर 3:44बजे), **भौम प्रदोष व्रत** -15 अक्टूबर, **शरद पूर्णिमा व्रत** - 16 अक्टूबर, **सत्यपूर्णिमा व्रत व कार्तिक स्नान प्रारम्भ** - 17 अक्टूबर, **पंचक समाप्त** - 17 अक्टूबर (दोपहर 4:20 बजे)

ग्रह स्थिति : चन्द्रमा : 3 अक्टूबर को **कन्या** राशि में, 4 से 6 अक्टूबर **तुला** राशि में, 7-8 अक्टूबर नीच की राशि **वृश्चिक** में, 9 से 11 अक्टूबर **धनु** राशि में, 12-13 अक्टूबर को **मकर** राशि में, 14-15 अक्टूबर **कुंभ** राशि में तथा 16-17 अक्टूबर मीन राशि में गोचर करेंगे।

आश्विन शुक्ल पक्ष में **गुरु** वृष राशि में रहते हुए 9 अक्टूबर को दोपहर 12:35 बजे वक्री होंगे। वक्री **शनि** यथावत कुंभ राशि में स्थित रहेंगे। इसी प्रकार **राहु** व **केतु** भी क्रमशः पूर्ववत मीन व कन्या राशि में स्थित रहेंगे। **सूर्य** व **मंगल** क्रमशः कन्या व मिथुन राशि में यथावत रहेंगे। **बुध** 10 अक्टूबर को प्रातः 11:20 बजे कन्या से तुला राशि में प्रवेश करेंगे। **शुक्र** 12 अक्टूबर को प्रातः 9:00 बजे तुला से वृश्चिक राशि में प्रवेश करेंगे।

युवा कैसे कमाएं धन ?

इन दिनों कुछ लोग देशभर के स्कूल-कॉलेजों में जाकर विद्यार्थियों को जीवन में धन कैसे कमाया जाए, समृद्ध कैसे बना जाए इसके टिप्स दे रहे हैं। वे उन्हें ऐसे युवाओं की वास्तविक कहानियां भी बताते हैं जिन्होंने इन तरीकों से बहुत शीघ्र ही धन भी कमाया तथा देश की जीडीपी को बढ़ाने में भी योगदान दिया।

देश में 'स्वावलंबन भारत अभियान' चलाया जा रहा है। इस अभियान के अंतर्गत हाल ही में भीलवाड़ा के रूपी देवी कन्या महाविद्यालय, मांडल तथा राजकीय पॉलिटेक्निक महाविद्यालय के विद्यार्थियों को बताया गया कि कक्षा 12 के विद्यार्थी को (जो तब तक वयस्क हो ही जाता है) अपनी पढ़ाई के साथ ही अपने रूचि के किसी काम को छोटे रूप में ही सही, प्रारंभ करना चाहिए तथा पढ़ाई पूरा करने तक 'मार्जिन मनी' का प्रबंध कर लेना चाहिए। जितनी उनके पास बचत होगी उसका पांच गुणा ऋण बैंक से प्राप्त हो जाता है। उस ऋण के साथ आगे काम प्रारंभ कर सकते हैं। यदि बैंक ऋण के साथ मार्जिन मनी भी उधार लेनी पड़े तो वह उद्यमी सफल नहीं हो पाता।

विद्यार्थियों को गुजरात का उदाहरण दिया जहां के युवा नौकरी करना पसंद नहीं करते। उन्होंने मोरवी शहर का भी उदाहरण दिया जहां चीन जैसा मॉडल खड़ा किया गया है। बताया गया कि केवल 2.5 प्रतिशत युवा ही नौकरियों में जा पाते हैं। इसलिए शेष 97.5 प्रतिशत युवाओं को बिना समय गंवाए उद्यमिता की ओर बढ़ना चाहिए।

उपरोक्त बातें बैंक ऑफ इंडिया के सेवानिवृत्त क्षेत्र प्रबंधक श्री हनुमान प्रसाद गुप्ता (जो कि स्वावलंबी भारत अभियान के चित्तौड़ प्रांत का भी काम देखते हैं) ने विद्यार्थियों के समक्ष रखीं। गुप्ता ने विद्यार्थियों को बैंक ऋण एवं स्टार्ट अप में सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली सुविधाओं की जानकारी भी दी।

(यह समाचार पढ़ने वाले युवा इस संबंध में ज्यादा जानकारी जिला केन्द्रों पर 'स्वावलंबी भारत अभियान' के अंतर्गत स्थापित किए गए 'स्व रोजगार केन्द्रों' या 'स्वदेशी जागरण मंच' के किसी कार्यकर्ता से प्राप्त कर सकते हैं।) विद्यार्थियों को ''जैविक उद्यमिता 37 करोड़ स्टार्टअप का देश'' पुस्तक से भी परिचित कराया गया। भीलवाड़ा के सफल उद्यमियों को सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया गया।

आओ संस्कृत सीखें-45

- **उसे मैं अच्छी तरह जानता हूँ।**
  तम् अहं सम्यक् जानामि।

कुकिंग / किचन टिप्स

- चुटकी भर हींग को मौसमी के रस में मिलाकर रूई में लगा लें। अब इस रूई को दर्द वाले दांत के नीचे रखें। दांत दर्द में आराम मिलेगा।

दिवस विशेष

विश्व खाद्य दिवस : 16 अक्टूबर
संयुक्त राष्ट्र संघ दिवस : 24 अक्टूबर

गीता- दर्शन

यजन्ते सात्त्विका देवान्यक्षरक्षांसि राजसाः।
प्रेतान्भूतगणांश्चान्ये यजन्ते तापसा जनाः।।

श्रीकृष्ण कहते हैं, हे अर्जुन! सात्त्विक पुरुष देवों को पूजते हैं, राजसिक पुरुष यक्ष और राक्षसों को तथा अन्य जो तामसिक मनुष्य हैं, वे प्रेत और भूतगणों को पूजते हैं। *(17/4)*

चुप संख्या ज्ञात करो

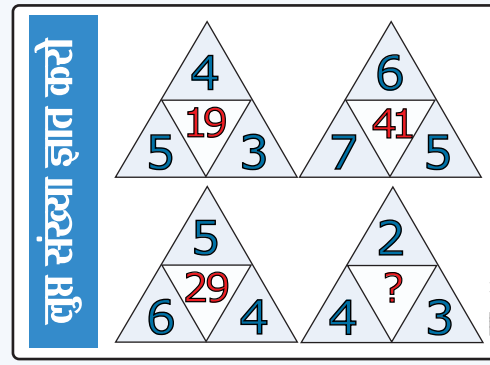

उत्तर : 14

जांचें कि आप कितने ज्ञानवान हैं?

नीचे दिए गए 10 प्रश्नों के उत्तर बताइए। अपना ज्ञान स्तर निम्नानुसार मानें- **सामान्य**- यदि आप 5 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **श्रेष्ठ** - यदि 8 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **उत्तम**- यदि सभी उत्तर सही देते हैं।

1. दांतीवाड़ा बांध भारत के किस राज्य में स्थित है?
2. सारागढ़ी का युद्ध कब लड़ा गया था?
3. भारतीय वायुसेना को पूर्व में किस नाम से जाना जाता था?
4. महाराष्ट्र की प्राचीन बौद्ध स्मारक गुफाएं किस नाम से जानी जाती है?
5. पानीपत के तृतीय युद्ध में अफगानों के विरुद्ध कौन लड़ा?
6. अमेरिका ने पहला एआई सॉफ्टवेयर कौन सा लांच किया था?
7. अण्डमान-निकोबार की राजधानी पोर्ट ब्लेयर का नाम बदल कर क्या रखा गया है?
8. दुनिया में सबसे ज्यादा प्रयोग किया जाने वाला एआई चैट कौन सा है?
9. पैरा ओलम्पिक 2024 (पेरिस) में भारत ने कुल कितने पदक प्राप्त किए?
10. गायत्री मंत्र का उल्लेख किस वेद में मिलता है?

उत्तर इसी अंक में...

कथा

नीयत

एक बुढ़िया दूसरे गांव जाने के लिए अपने घर से निकली। उसके पास एक गठरी थी। चलते-चलते थकान से उसे गठरी भारी लगने लगी। तभी उसने देखा कि एक घुड़सवार आ रहा है। बुढ़िया ने उसे आवाज दी। घुड़सवार बोला, ''क्या बात है अम्मा, मुझे क्यों रोका?''

बुढ़िया ने कहा, ''बेटा, मुझे पास वाले गांव जाना है। बहुत थक गई हूं। गठरी उठाई नहीं जाती। तुम यह गठरी घोड़े पर रख लो तो मुझे चलने में आसानी हो जाएगी।''

घुड़सवार ने कहा, ''अम्मा, तू पैदल है। मैं घोड़े पर हूं। गांव अभी दूर है। पता नहीं तू कब तक वहाँ पहुंचेगी। मैं तो थोड़ी ही देर में पहुंच जाऊंगा। मुझे तो आगे जाना है। वहां क्या तेरा इंतजार करते थोड़े ही बैठा रहूंगा?'' यह कहकर वह चल पड़ा। कुछ दूर जाने के बाद वह सोचने लगा, ''मैं भी कितना मूर्ख हूं। बुढ़िया ढंग से चल नहीं सकती। उसे ठीक से दिखाई भी नहीं देता।

वह मुझे गठरी दे रही थी। संभव है उसमें कीमती सामान हो। मैं उसे लेकर भाग जाता तो कौन पूछता! बेकार ही मैंने उसे मना कर दिया।''

वह फिर बुढ़िया के पास आकर बोला, ''अम्मा, लाओ अपनी गठरी। मैं ले चलता हूं। गांव में रुककर तेरी राह देखूंगा।'' किंतु बुढ़िया ने कहा, ''ना बेटा, अब तू जा। मुझे गठरी नहीं देनी।''

यह सुन घुड़सवार बोला, ''अभी तो तू कह रही थी कि ले चल! अब ले चलने को तैयार हुआ तो गठरी दे नहीं रही।''

बुढ़िया मुस्कराकर बोली, ''जो तेरे भीतर बैठा है, वही मेरे भीतर भी बैठा है। जब तू लौटकर आया तभी मुझे शक हो गया कि तेरी नीयत में खोट आ गया है।''

वर्ग पहेली

अधिकतम अमात्रिक शब्द खोजिए

अं	ग	ऊ	न	भ	य	ज्ञ	ष
क	ई	द	स	व	ह	श्र	ड
च	ख	र	ब	ज	ल	म	त
उ	ओ	आ	छ	प	ढ	ह	ए
फ	स	ठ	न	त्र	झ	ट	क
प	थ	अ	क्ष	र	औ	घ	ड़
ढ़	ऐ	श	ऋ	ण	इ	ध	र

बाल प्रश्नोत्तरी - 64

जीतें पुरस्कार अब दूसरी और तीसरी बार भी

बाल मित्रों, 16 अगस्त का अंक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। अपने उत्तर 'उत्तर शीट' में भरकर 7976582011 पर वॉट्सएप करें। प्रथम 10 को प्रमाण-पत्र तथा प्रथम 5 को पुरस्कृत किया जाएगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल-किशोर ही भाग ले सकते हैं। लगातार 5 बार उत्तर सही पाए जाने पर विशेष पुरस्कार दिया जाएगा। उत्तर भेजने की अंतिम तिथि - **20 अक्टूबर, 2024**

1. पाकिस्तान से टूट कर (1971 में) बनने वाला देश कौन सा है?
(क) बांग्लादेश (ख) नेपाल (ग) अफगानिस्तान (घ)जम्मू-कश्मीर

2. विश्व में सबसे ज्यादा मुस्लिम जनसंख्या किस देश की है?
(क) पाकिस्तान (ख) सऊदी अरब (ग) इण्डोनेशिया (घ) दक्षिण अफ्रीका

3. इस जन्माष्टमी को विश्व हिंदू परिषद की स्थापना के कितने वर्ष पूर्ण हुए हैं?
(क) 50 वर्ष (ख) 60 वर्ष (ग) 75 वर्ष (घ) 100 वर्ष

4. 'मोइदम' को विश्व धरोहर सूची में शामिल गया गया, यह स्थान कहाँ पर है?
(क) असम (ख) मेघालय (ग) मणिपुर (घ) केरल

5. अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस किस दिन मनाया जाता है?
(क) 8 सितम्बर (ख) 9 सितम्बर (ग) 10 सितम्बर (घ) 11 सितम्बर

6. सेवाकार्य करते हुए संघ के 2 स्वयंसेवक किस स्थान पर बलिदाए हुए?
(क) कोझीकोड (ख) कन्नूर (ग) वायनाड (घ) नीलगिरी

7. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन भारत के कौन से राष्ट्रपति थे?
(क) चतुर्थ (ख) तृतीय (ग) द्वितीय (घ) प्रथम

8. जैसलमेर के किस स्थान पर पाथेय कण के पाठकों का सम्मेलन आयोजित हुआ?
(क) सम (ख) पोकरण (ग) भनियाना (घ)फतेहगढ़

9. माता अरुंधति ने किसके पास रहकर 7 वर्ष में शिक्षा पूर्ण की ?
(क) सावित्री (ख) गार्गी (ग) मैत्रेयी (घ) सीता

10. भारतीय सेना की सिख रेजीमेंट 12 सितम्बर को कौनसा दिवस मनाती है?
(क) सारागढ़ी (ख) कारगिल (ग) सेना दिवस (घ) वायुसेना दिवस

समीकरण हल कीजिए

उत्तर : 5 + 6 +10 = 21

बाल प्रश्नोत्तरी-62 के परिणाम

दिव्या सोमेन्द्र मान्या जाह्नवी श्रवण

1. दिव्या नरूका, बोरुदा, जोधपुर
2. सोमेन्द्र सिंह, गड़रा रोड, बाड़मेर
3. मान्या सिंह, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश
4. जाह्नवी गोयल, प्रताप नगर, सांगानेर
5. श्रवण पुरोहित, बागेड़ा, जालोर
6. अंशिका खंडेलवाल, महावीर नगर, टोंक
7. दिव्या शर्मा, नायला, जयपुर
8. डिंपल राजपुरोहित, फलौदी, जोधपुर
9. सुभाष गुर्जर, किशनगढ़, अजमेर
10. भूपेन्द्र सिंह, आदर्श नगर, जयपुर

सही उत्तर
1. (क)
2. (ख)
3. (ख)
4. (ग)
5. (घ)
6. (क)
7. (ख)
8. (ग)
9. (घ)
10.(क)

निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वॉट्सएप करें। (बाल प्रश्नोत्तरी - 64)
(अपनी पासपोर्ट फोटो अवश्य वॉट्सएप करें)

1.( ) 2.( )3.( )4.( ) 5.( )6. ( )7.( )8.( ) 9.( )10.( )

नाम.....कक्षा.....पिता का नाम.....

उम्र..... पूर्ण पता.....

.....पिन.....मोबाइल.....

ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)

Punjab & Sind Bank
(A Govt. of India Undertaking)

जहाँ सेवा ही जीवन - ध्येय है

PSB UniC
You & I Connected
Mobile & Internet Banking Solution

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

8.45%* वार्षिक
ब्याज दर

पीएसबी अपना घर

₹765/-
मासिक किस्त
/लाख*

शून्य
विधिक और
मूल्यांकन प्रभार*

शून्य
प्रसंस्करण
प्रभार*

30 साल
भुगतान
अवधि*

* नियम एवं शर्तें लागू

https://punjabandsindbank.co.in

e-mail: ho.customerexcellance@psb.co.in

1800 419 8300 (टोल फ्री)

हमारा अनुसरण करें @PSBIndOfficial

स्वराज्य संस्थापक

छत्रपति शिवाजी

19

आलेख एवं चित्र

ब्रजराज राजावत

पाक्षिक
पाथेय कण
(01-15 अक्टूबर, 2024)
(26 सितम्बर को प्रकाशित, पृष्ठ 20)

आर.एन.आई पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY 202/2024-26

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/WPP 01/2024-26

RAS- 2021 में 750+ Selections

Springboard ACADEMY
AN INSTITUTE FOR IAS & RAS

RAS Foundation Batch

Dileep Mahecha
Director

Online & Offline
सेमिनार
RAS 2021 में चयनित अधिकारियों द्वारा मार्गदर्शन

7 अक्टूबर
सोमवार
@ 10:15 AM

8 अक्टूबर से बैच प्रारम्भ (Online & Offline)

Exclusive Live Batch from Classroom

RAS 2024
विज्ञप्ति जारी
पद- 733

RAS Pre. / PSI

बैच प्रारम्भ (Online & Offline)

Exclusive Live Batch from Classroom

RAS Pre Test Series Start

From 15 Sept. 2024 (Online & Offline)

Riddhi - Siddhi, Gopalpura Bypass, Jaipur
9636977490, 0141-3555948

ऐप डाउनलोड करने के लिए
QR Code स्कैन करें
GET IT ON Google Play

Connect with us- Springboard Academy Online Springboard Academy Jaipur

स्प्रिंगबोर्ड एकेडमी के IAS, RAS हेतु प्रमाणित क्लास नोट्स उपलब्ध The Notes Hub 7610010054, 7300134518

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक माणकचन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी, ए-10, 22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालय : पाथेय भवन, 4 मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
सम्पादक- रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 1,2,3,4 व 5 अक्टूबर, 2024 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में,